SWAR SINDHU: NATIONAL PEER-REVIEWED/REFEREED JOURNAL OF MUSIC
A UGC CARE LISTED JOURNAL
ISSN 2320-7175 (O) | VOLUME 12, ISSUE 03, DECEMBER, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org

स्वातंत्र्योत्तर काल में गज़ल गायकी का स्वरूप

ARPIT TIWARI

Research Scholar, Jiwaji University Gwalior M.P.

सार

भारत की संस्कृति सांस्कृतिक बहुलता इसके इतिहास में हुए सांस्कृतिक तत्वों के आदान-प्रदान का परिणाम है। भारत के प्राचीन संगीत तथा भाषा से विदेशी संस्कृति व भाषाई तत्वों के सम्पिश्रण से एक नई भाषा उर्दू व एक नई गायक शैली गज़ल का जन्म हुआ। प्रस्तुत शोध पत्र में अमीर खुसरों द्वारा गज़ल से भारतीयों को परिचित कराने से लेकर स्वतंत्र भारत में विभिन्न गज़ल गायक कलाकारों द्वारा गज़ल को विकसित करने की यात्रा का वर्णन है। गज़ल हर काल, हर समय में विद्यमान रही प्रचलित रही फिर चाहे वह दिल्ली सल्तनत का युग हो या मुगल साम्राज्य प्रस्तुत शोध पत्र में औरंगजेब द्वारा ललित कलाओं पर प्रतिबंध लगाने के परिणाम स्वरूप लखनऊ के गज़ल का केंद्र बनने से पुनः गज़ल के दिल्ली आने का वर्णन है साथ ही अंतिम मुगल सम्राट बादशाह बहादुरशाह व उनके दरबारी कवि गालिब की भी चर्चा है। भारत की आजादी के बाद गज़ल गायकी में अनेक परिवर्तन हुये जैसे गज़ल में शास्त्रीय संगीत का प्रभाव का कम होना, वाद्यो का स्वरूप व वादन में परिवर्तन गज़ल के वर्ण विषय में परिवर्तन आदि की चर्चा शोध पत्र में है साथ ही गज़ल गायक जगजीत सिंह व मेंहदी हसन द्वारा गज़ल को नव स्वरूप दिये जाने की चर्चा है। इस प्रकार शोध पत्र के माध्यम से आप गज़ल की यात्रा विभिन्न गायको की विशिष्ट शैली से परिचित होगे तथा भारत की ऐतिहासिक घटनाओं के कारण गज़ल के बदलते स्वरूप से भी अवगत होंगे।

***मुख्य शब्द**: भारतीय संस्कृति, सामवेद, कव्वाली, वाज़िद अली शाह, राजदरबार, फिल्म संगीत, बेगम अख़्तर, मेंहदी हसन, गुलाम अली, जगजीत सिंह, शिष्य परम्परा।*

प्रस्तावना

भारतीय सभ्यता व संस्कृति प्राचीनतम है। भारत की सभ्यता व संस्कृति की विकास यात्रा के साथ ही जुड़ी है। संगीत की उत्पत्ति व विकास की यात्रा सभ्यता के विकास के साथ ही संगीत भी उन्नत व परिष्कृत होता गया। सामवेद भारतीय संगीत का प्राचीनतम ग्रंथ है। भारतीय संगीत की उत्पत्ति भी इसी से मानी जाती है। प्राचीनकाल से ही संगीत के दो रूप या धारायें मिलती है एक धारा जिसमें संगीत परिमार्जित व परिष्कृत रूप में था जिसे मार्गी संगीत कहा गया। मार्गी संगीत यज्ञ याज्ञ जैसे धार्मिक समारोहों तथा समाज के उच्च वर्ग से संबंधित था इसीलिए इसमें नियमबद्वता अधिक थी, मार्गी संगीत उद्देश्य मोक्ष की प्राप्ति रहा है। दुसरी धारा हमें देशी संगीत के रूप में मिलती है। जिसमें नियमों का बंधन नहीं है जो लोक रूचि के अनुसार परिवर्तित होता रहता है। लौकिक समाराहों पर गायन, वादन व नृत्य का आयोजन देशी संगीत का ही रूप है।

भारतीय संगीत आध्यात्मिकता से बहुत गहराई से जुड़ा है। अतः ईश्वर उपासना के गीत व मन्त्रों का उच्चारण ऋषि मुनि व तपस्वी संगीतिक ध्वनियों (स्वरों) में किया करते थे। कालान्तर में भारत पर विदेशी जातियों के आक्रमण हुए विदेशी जातियां भारत में आकर बसी। वे अपने साथ अपनी संस्कृति भी लेकर आई और भारतीय संस्कृति और विदेशी संस्कृति के मिलन से एक नई, मिली जुली संस्कृति का जन्म हुआ। भारतीय संगीत का इतिहास इसी प्रकार की समन्वयकारी संस्कृतियों के विकास का इतिहास है। भारत की ललित कलाओं ने अन्य कलाओं को आत्मसात कर लिया वह चाहे गीत हो वाद्य हो या नृत्य हो। इसी सामंजस्य का एक रूप है गज़ल गायकी।

वस्तुतः गज़ल पढ़ने की चीज है। शायर इसे तरन्नुम में पगज़ल के भावों के अनुरूप उसकी धुन बनाकर गा लिया जाता है। यह धुन राग आधारित हो भी सकती है और नहीं भी लेकिन जब इसे संगीतबद्व करके गाया जाता है तब इसकी मधुरता और आनंद में कई गुना वृद्धि हो जाती है। मशहूर शायर फिराक गोरखपुरी जी लिखते है - ''गज़ल महबूब से बातचीत करने को कहते है।"[1] बशीर बद्र जी ने बहुत ही सुंदर अंदाज में गज़ल की परिभाषा दी है। ये शबनमी जहजा है, आहिस्ता गज़ल पढ़ना

तितली की कहानी है, फूलों की जबानी है।''[2] शरतचंद्र परांजये जी के शब्दों में ''गज़ल मूलतः फारसी भाषा की काव्यगत शैली है। इसमें प्रणय प्रधान गीतों का समावेश होता है।"[3]

भारत में गज़ल गायकी का विकास

भारत में गज़ल को प्रसारित करने व प्रतिष्ठा दिलाने का कार्य अमीर खुसरो ने किया। अमीर खुसरो खिलजी व तुगलक वंश के शासनकाल में राजकवि होने के साथ गज़ल गायक भी थे। खुसरो ने अपनी रचनाओं में उर्दू के साथ साथ हिंदी शब्दों का प्रयोग भी किया। खुसरों द्धारा रचित कब्वालियों में खुसरों निजाम के बलि बलि जइहॉ जैसे हिंदी शब्द मिलते है। अमीर खुसरो का हिंदी व ब्रजभाषा पर भी समान अधिकार था। भारतीय इतिहास ने दिल्ली सल्तनत के काल से मुगल वंश में प्रवेश किया। मुगलों के शासनकाल में भी गज़ल के विकास हेतु पर्याप्त अवसर मिला बाबर, हुमायूं, अकबर, जहांगीर, शाहजहां ने संगीत को प्रोत्साहन दिया। औरंगजेब के समय संगीत की गति धीमी हो गई वस्तुतः औरंगजेब ने संगीत के साथ अन्य कई कलाओं पर भी प्रतिबंध लगा दिया था। औरंगजेब के शासनकाल में कई गायक कलाकार दिल्ली से पलायन कर गए और स्थानीय शासकों के आश्रय में पहुंचे इस प्रकार गज़ल का केंद्र लखनऊ हो गया। लखनऊ के नवाब बाजिद अली शाह ने गज़ल को प्रोत्साहित किया। लखनऊ के ईष्ट इंडिया कम्पनी में विलय के बार एक बार पुनः गज़ल को विकसित होने का अवसर दिल्ली में मिला। दिल्ली में अंतिम मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर स्वयं एक शायर थे तथा उनके दरबार में गालिब जैसे शायर हुए

आजादी के बाद गज़ल गायकी में बदलाव

आजादी के बाद संगीत के विधाओं की तरह गज़ल गायकी में भी कई बदलाव आये। इन बदलाव या परिवर्तनो के पीछे कई कारण रहे जैसे राजदरबारों का समाप्त हो जाना, तवायफो के कोठो पर होने वाली महफिलो का बंद हो जाना आदि। इसी समय भारत में फिल्मो को दौर भी प्रारंभ हुआ। फिल्मों मे संगीत को सरल रूप में प्रस्तुत किया जाता था। फिल्मों के जरिये संगती से आम इंसान का जुड़ाव भी हुआ और लोगो के जीवन रहन-सहन विचारधारा पर इसका प्रभाव भी हुआ। यद्यपि आजादी के बाद हमें गज़ल गायकी में जो परिवर्तन देखने को मिलते है उसकी शुरूआत आजादी के कुछ समय पहले ही हो चुकी थी। और ये परिवर्तन बेगम अख्तर, मल्लिका पुखराज जैसे कलाकारों की गायकी में दिखाई देने लगे थे। आजादी के बाद गज़लें फिल्म संगीत का हिस्सा बनी और कई गायकों जैसे के.एल सहगल, तलत मेहमूद, मोहम्मद रफी, लता मंगेशकर, आशा भोसले ने फिल्मों में गज़ले गाई। फिल्मों में आने वाली धुने सरल होती थी जो जनता द्वारा बहुत पंसद कि गई।

संगत वाद्यों व वादन में परिवर्तन

आजादी के बाद की गायकी में संगत वाद्यों में भी परिवर्तन आया जहां आजादी से पहले संगत साजों में केवल हार्मोनियम, तबला, सांरगी जैसे वाद्य ही बजाये जाते थे। वहां आजादी के बाद कुछ नये वाद्य इसमें शामिल किये गये थे। इनमें कुछ पश्चिमी वाद्य भी शामिल किये गये उदाहरण के लिये जगजीत सिंह जी ने अपने गज़लों के गायन में तबले के साथ-साथ सितार, संतूर, बांसुरी, वायलिन, स्पेनिश गिटार, ढोलक जैसे वाद्यो का इस्तेमाल करते रहें है। आजादी से पहले गज़ल में ताल की संगत हर कलाकार लगभग एक जैसे ही करता था जैसे ताल की संगत स्थायी या मतले के साथ ही होती थी। शेर या अंतरा ज्यादातर बिना ताल के ही गाया जाता था और जब पुनः स्थायी गाते थे तो लग्गी लडिया बजाई जाती थी। मतले व शेर के बीच में हार्मोनियम पर मतले की ही धुन को बजा दिया जाता था लेकिन आजादी के बाद की गायकी में अंतराल संगीत बजाया जाने लगा जो विभिन्न वाद्य यंत्रो के संगत से बजाया जाता था।

गज़लो में रागो का प्रयोग

आजादी के बाद गज़ल गायकी में राग के प्रयोग में भी परिवर्तन आये। अब गज़ल में शुद्ध रागो के प्रयोग के साथ आवश्यकतानुसार कही कही विवादी सुर भी प्रयोग किया जाने लगा इस समय गज़ल पर ठुमरी, दादरा, टप्पा का प्रभाव न होकर गज़ल की बंदिश सीधी-सीधी होने लगी। गज़ल की गायकी सरल हो गई जो आम जनता को भानी लगी। गज़ल की बंदिश गज़ल के भाव के अनुरूप बनाई जाने लगी जैसे गंभीरता, दुख, चपलता जैसे भाव बंदिश द्वारा अभिव्यक्त हो सके।

गज़ल और तलफ़्फ़ुज़ आदायगी

इस समय की गज़ल गायकी में शब्दों के उच्चारण पर भी ध्यान दिया गया। आलाप, तानो के अधिक प्रयोग न होने के कारण भी गज़लो में शब्दो का सही उच्चारण हो पाया। आजादी के पहले की गज़ल गायकी में आलाप, तानों, गमक व मींड़ के अत्याधिक प्रयोग के कारण

उच्चारण पर कम ध्यान दिया जाता था। कही-कही उच्चारण में कई शब्द छूट भी जाते थे। जैसे बेगम अख्तर की एक प्रसिद्ध गज़ल है - बुझी हुई शम्मा का धुआँ हुं और अपनी मरकज को जा रहा हूँ। इस गज़ल के मतले को जब बेगम अख्तर गाती है तो उन्होंने धुआँ हुँ गाया तो "ह"पर अधिक बल दिया और इस कारण अपने शब्द का उच्चारण ठीक से नहीं हो पाया जबकि आजादी के बाद आलाप, तानों की अधिकता गज़ल गायकी में न होने के कारण शब्दों के उच्चारण पर ध्यान भी दिया गया और उनके उच्चारण भी ठीक प्रकार से किये भी गये।

गज़ल का वर्ण विषय

आजादी के पहले गज़लो का विषय इश्क, हुश्न व शराब हुआ करता था। आजादी के बाद गज़ल का विषय देश, समाज, दुनिया, व्यक्ति का दुख, संघर्ष आदि हो गया। इसका परिणाम ये हुआ कि गज़ल गायकी भी संगीत की शास्त्रीयता से मुक्त होकर सरलता और सहजता कि ओर बढ़ी। गज़ल गायकी की इसी सरलता ने आम जनता के दिलों में अपनी जगह बनाई।

फिल्म संगीत और गज़ल गायकी

स्वतंत्रता के पश्चात् फिल्म संगीत में भी गज़ल की प्रधानता बढ़ी। आजादी के बाद कई फिल्मों में गज़ले आई जिन्हें के.एल. सहगल, तलत मेहमूद, लता मगेंशकर जैसे गायकों ने गाया। गज़ले फिल्मो के द्वारा बहुत लोकप्रिय हुई और संगीत की समझ रखने वाले व संगीत की समझ न रखने वाले साधारण श्रोता तक गज़ले पहुंची गज़लो को पसंद किया गया और सराहा भी गया। ''गज़ल गायकी आज से 60 वर्ष पूर्व लगभग कोठों और गाने तालियों के साथ जुड़ी रही, यहां तक कि उस्ताद बरकत अली खां जैसे धुरंधर गवैये का गाना भी लोग कोठों पर सुनने जाते थे। गज़ल गायकी को कोठों से घर धर तक पहुंचाने का श्रेय ग्रामोफो बेग अख्तर तथा कुंदन लाल सहगल को जाता है।"[4]

बेगम अख्तर

गज़ल गायिकी का दौर सामान्यतः बेगम अख्तर के समय से माना जा सकता है। इस समय संगीत पर शास्त्रीयता का बंधन शिथिल होता गया और संगीत भाव प्रधान अधिक हो गया। बेग़म अख़्तर पद्मपि अपनी गायकी में शास्त्रीयता से प्रभावित थी फिर भी उन्होंने अपनी गायिकी में भाव अभिव्यक्ति पर अधिक बल दिया। उनके बाद आने वाले कई गायक गायिकाओं ने बेगम अख्तर की गायकी का अनुकरण किया और नये कलाकारों के लिए गज़ल गायकी का मार्ग प्रशस्त किया। बेगम अख्तर का प्रभाव शोभा गुई, कमला सरिया, शांति हीरानंद आदि की गायकी पर देखा जाता है।

मेंहदी हसन

स्वातंत्र्योत्तर गज़ल गायकों में मेहदी हसन का नाम किसी परिचय का मोहताज नहीं है। मेंहदी हसन की गायकी के विषय में डॉ. प्रेम भण्डारी लिखते है -''मेंहदी हसन की गायकी में स्वरो की सच्चाई है उनकी आवाज हल्का सा खरखरापन और खुमारी लिए है, बहुत ऊँची आवाज का इस्तेमाल मेंहदी हसन नहीं करते है। अधिकतर मंद्र सप्तक के पंचम और तार सप्तक के गंधार तक गाते है। ज्यादातर उनका गायन मध्य सप्तक से ही होता है। स्वरों को शुद्धता के साथ लगाने में मंहेदी हसन को महारत हासिल है।"[5]

मेंहदी हसन की गायकी में शब्दों का सही उच्चारण, रागों का प्रयोग, आलापों का प्रयोग ताल का प्रयोग, भाव और रस का समावेश उनकी गायकी को विशिष्ट बनाता है। एक कलाकार के साथ ही मेंहदी सहन एक अच्छे उस्ताद या गुरू भी है। उन्होंने अपनी गायिकी को अपने बेटों व शिष्यों को सिखाया। उनके शिष्य वर्तमान में मेंहदी हसनजी की गायिकी की इस परम्परा को जारी रखे हुए उनकी गायिकी के संवर्धन का कार्य कर रहे है।

गुलाम अली

गुलाम अली गज़ल गायकी के आकाश में वो चमकते सितारे है जिन्होंने गायकी को एक नई पहचान दी है। गज़ल जैसी संजीदा गायकी में गुलाम अली ने चंचलता और मस्ती का जो मेल किया वह उनकी गज़ल गायकी को अन्य से विशिष्ट बनाता है।'गुलाम अली साहब की गज़ल गायिकी में शब्दों को भावों की अभिव्यक्ति बड़ी सहजता से मिलती है इनकी गायिकी बहुत परिपक्व है। आवाज और गायिकी में

शास्त्रीय संगीत का रियाज साफ झलकता है। गुलाम अली जी की आवाज गायकी तथा लय की विविधता का सहारा लेकर शब्दों को प्रधन बनाने में बड़ी सफल रही है।"[6]

जगजीत सिंह

ये दौलत भी ले लो ये शोहरत भी ले लो।
भले छीन लो, मुझसे मेरी जवानी ।।
मगर मुझको लौटा दो बचपन का सावन।
वो कागज की कश्ती वो बारिश का पानी ।।

सुदर्शन फकीर की लिखी इस गज़ल को जिसने अपनी गायकी और आवाज के जादू से अमर कर दिया वो कोई और नहीं प्रसिद्ध गज़ल गायक जगजीत सिंह है। जगजीत सिंह जी की गायकी युवा पीढ़ी को सबसे ज्यादा प्रभावित करती है षड़ज की आवाज व गाने में ठहराव है उच्चारण की सफाई है और स्वर में जो कहा है वो उनकी गज़ल गायकी को प्रभावशाली बनाते है।

निष्कर्ष

स्वतंत्रता के पश्चात गज़ल गायकी में अनेक बदलाव आये। आजदी से पहले की गज़ल गायकी पर टप्पा, दादरा, ठुमरी आदी का प्रभाव था वहीं आजादी के बाद गज़ल इन प्रभावों से मुक्त होकर भाव अभिव्यक्ति की प्रधानता की ओर बढ़ी। गज़ल के विभिन्न रूपों में परिवर्तन आये। गज़ल का वर्ण, विषय बदला तो गायन के रागों का स्वरूप बदला, गज़ल के वाद्य यंत्रो का प्रयोग बदला तो आलाप-तानो में परिवर्तन आया। गज़लो पर फिल्म संगीत का प्रभाव पड़ा तो फिल्मों में गज़ले गायी गई। आजादी के बाद में गज़ल गायकों में मेंहदी हसन, जगजीत सिंह, गुलाम अली, बेगम अख्तर के नाम उल्लेखनीय है जिन्होनें ने अपनी गज़ल गायकी में नये प्रयोग किये। वर्तमान में अनेक गज़ल गायक कुछ परम्परागत, कुछ नयेपन के साथ गज़ल गा रहें है। जगजीत सिंह जी ने गज़ल गायकी में बहुत से नये प्रयोग किये है। जगजीत सिंह की गज़ल गायकी श्रोताओं को मंत्र मुग्ध कर देती है। उनकी गज़ल को सुनकर श्रोता जब एक शेर सुनकर डुबता है तो संगीत से अगले शेर में अपने आप खो जाता है। जगजीत सिंह की गायकी का असर कुछ ऐसा था कि श्रोता घंटो तक उनके लाइव प्रोग्राम में गज़लो का रसास्वादन करते रहते थे। एक ही गज़ल को अलग-अलग कन्सर्ट में नये अंदाज में प्रस्तुत करना साथ ही वादन में भी अलग प्रयोग करना जगजीत सिंह की गायकी को विशेष बना देता था इसके साथ ही जगजीत जी ने अपने गज़ल गायकी में पाश्यात वाद्यों का प्रयोग बखुबी किया। इसी प्रकार मेहदी हसन ने अपने गज़ल गायन में स्पेनिश गिटार, सिंथेसाइजर, बांसुरी, सितार आदी वाद्ययंत्रो का कुशलता से प्रयोग किया। मेंहदी हसन साबह ने अपनी आवाज और भाव अभिव्यक्ति में निपुणता से गज़ल के असर को जादुई बना दिया। इस प्रकार गज़ल गायकी के सरलीकरण और सहज प्रस्तुत और आधुनिक वाद्ययंत्रो के प्रयोग ने गज़ल को अधिक चित्ताकर्षक बनाया। युवा श्रोताओं को अपनी ओर खींचा। गज़ल में लोकप्रियता में वृद्धि की तो दुसरी ओर पाश्चात वाद्ययंत्रो के अत्याधिक प्रयोग ने कही न कहीं गज़ल की आत्मा को ठेस पहुँचाई उसके भाव पक्ष को क्षति पहुँची है।

संदर्भ

गोरखपुरी, फिराक: कामरूप, संस्करण 1960 पृ. सं. 13 प्रकाशक - आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली।
नदंन, कन्हैया लाल: आज के प्रसिद्ध शायर, बशीर बद्र संस्करण 2014, पृ. सं. 16 प्रकाशक - राजपाल एण्ड संस दिल्ली।
गज़ल संगीत अंक, परांजपे, डॉ. शरतचंद्र श्रीधर: भारतीय साहित्य तथा संगीत में गज़ल, पृ. सं. 09, 2013 संगीत कार्यालय हाथरस।
गज़ल संगीत अंक, कृष्ण स्वरूप: गज़ल और गज़ल गायकी पृ.सं. 11, अंक जनवरी 2013, संगीत कार्यालय हाथरस।
भण्डारी डॉ. प्रेम: हिन्दुस्तानी संगीत में गज़ल गायकी संस्करण 1995, पृ. सं. 154, प्रकाशक राजस्थानी ग्रंथागार जोधपुर।
भण्डारी डॉ. प्रेम: हिन्दुस्तानी संगीत में गज़ल गायकी, संस्करण 1995 पृ. सं. 157, प्रकाशक राजस्थानी ग्रंथागार जोधपुर।